

आर.एन.आई. नं. RAJHIN 16886

पशु आहार एवं चारा बुलेटिन

पशुधन चारा अंशोधन प्रबन्धन एवं तकनीक केन्द्र



राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
बीकानेर

वर्ष : 03

अक्टूबर-दिसम्बर, 2017

अंक : 02



प्रो. बी.आर. छीपा

कुलपति की कलम से...

संतुलित पशु आहार से पशुपालन को बनाएं लाभकारी

प्रिय किसान एवं पशुपालक भाइयों और बहनों।

दीपावली के पुनीत पर्व पर आपके मंगलमय जीवन और खुशहाली की कामना करता हूँ। ऋतु परिवर्तन प्रकृति की देन है। शरद ऋतु प्रारम्भ हो रही है। जिसके अनुसार हमें अपने रहन-सहन और खान-पान में भी बदलाव करना है। पालतू पशुओं के लिए भी हमें इसी प्रकार ऋतु के अनुकूल बंदोबस्त करने होते हैं। किसान भाई रबी की फसल उगाई कार्य के साथ-साथ ही सर्दी के अनुसार पशुओं के आवास स्थलों को भी तैयार करने में लग गए होंगे। रबी की बुवाई के साथ ही चारा और दाना फसलों की बिजाई कर लेना हमारे हित में है। जहां तक सम्भव हो सके पशुओं के आहार में स्थानीय सस्ते दाने-चारे को ही

सम्मिलित किया जाना चाहिए। इससे मितव्ययता के साथ अधिक उत्पादन लिया जाना संभव हो सकेगा। हमें बाजार पर अपनी निर्भरता कम करके स्वयं के खेतों में ही इसका उत्पादन करने के लिए सचेत रहना चाहिए। संतुलित पशु आहार से ही अधिक उत्पादन की उम्मीद की जा सकती है। अतः पशुपोषण वैज्ञानिकों के निरन्तर सम्पर्क में रहकर नवीन तकनीक और सलाह से आहार का संयोजन करना हमारे हित में है। पशुचिकित्सा एवं पशुविज्ञान विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने पशु चारे के संरक्षण की विधियां, खनिज-लवण मिश्रण और चारे की पौष्टिक आहार ईंटों सहित अनेकों उपयोगी नवाचार किए हैं। हरे चारे उत्पादन की अजोला तकनीक हर किसान और पशुपालक के घर में ही पौष्टिक चारा वर्ष पर्यन्त उपलब्ध करवाने में कारगर सिद्ध हो रही है। आप भी ऐसी सरल और कम लागत की तकनीक को अपनाएं। खेती और पशुपालन में लागत को कम करने के लिए वैज्ञानिक पद्धति के अनुसार अपनी कार्य प्रणाली को बनाएं। पशुओं के लिए संतुलित आहार, उचित आवास व्यवस्था, पशु स्वास्थ्य और चिकित्सा, नस्ल सुधार और प्रजनन सम्बन्धी जानकारी ले कर पशुपालन को एक लाभकारी व्यवसाय बना सकते हैं। जय हिन्द।

(बी.आर. छीपा)



सभी पशुपालक एवं किसान भाइयों को दीपावली की हार्दिक शुभकानाएँ ।

जुलाई-सितम्बर, 2017 माह में चारे व पशु आहार के बाजार भाव

मंदी के चलते चापड़, खल व चूरी के भावों में बनी रही गिरावट तथा कोरमा व चारे के भावों में आंशिक तेजी दर्ज की गई



वर्षा काल होते हुए भी चारा मण्डी में सितम्बर माह के प्रारम्भ से ही चारे के भावों में आंशिक तेजी रही, जो खरीफ चारे की आवक शुरु होने तक बनी रहने की संभावना है। बीकानेर चारा मण्डी में तूड़ी के भावों में 50 रुपये, मूंगफली चारा में 100-200 रुपये तथा पाला के भाव में 200 रुपये प्रति क्विंटल की वृद्धि दर्ज की गई। चौमूं चारा मण्डी में तूड़ी के भाव में 50 रुपये तथा खेजड़ी लूंग में 100 रुपये प्रति क्विंटल की तेजी दर्ज की गई। बीकानेर अनाज मण्डी में तिमाही के अन्त तक चापड़, खल व चूरी के भावों में गिरावट दर्ज की गई जिसका मुख्य कारण हरे चारे की उपलब्धता के रहते ग्राहकी का कमजोर होना रहा है। देश में गन्ने की फसल आ जाने और नये गुड़ की आवक बढ़ने के कारण सितम्बर माह में गुड़-रसकट के भावों में 100-200 रुपये गिरावट के साथ अब भाव 3200-3500 रुपये प्रति क्विंटल हो गये। इस तिमाही में ग्वार कोरमा में 200-350 रुपये प्रति क्विंटल की तेजी रही। गत वर्ष की तुलना में दोनों मंडियों में दाना, खल तथा चूरी के भावों में कमी रहने का मुख्य कारण बाजार में इनकी कमजोर मांग का बना रहना है। पशुपालक व किसान भाईयों को सलाह दी जाती है कि आगामी महीनों में हरा चारे की उपलब्धता बनाये रखने के लिए खेत के एक हिस्से में रबी हरा चारे की दलहनी व अदलहनी दोनों प्रकार के चारा फसलों की बुवाई अवश्य करें।

बीकानेर व चौमूं मण्डी के भाव (रुपये प्रति क्विंटल)

पशु चारे	बीकानेर			चौमूं		
	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	जुलाई	अगस्त	सितम्बर
गेहूँ चारा (तूड़ी)	450-550	450-600	500-600	450-550	500-600	500-600
धान चारा (पराली)	300-350	300-400	350-400	300-325	300-325	250-325
बाजरा चारा	450-550	500-600	550-600	425-475	450-550	475-550
ज्वार चारा	550-600	550-650	550-650	525-575	550-575	550-575
मूंगफली चारा एवं गुणा	650-700	650-900	750-900	-	-	-
ग्वार चारा	550-700	650-800	650-800	300-350	250-350	200-350
सेवण घास	700-750	700-800	700-800	-	-	-
खेजड़ी लूंग	1200-1300	1200-1400	1000-1200	1200-1400	1200-1400	1300-1500
बेरी पाला	1300-1500	1400-1500	1500-1700	-	-	-
पशु आहार व दाना						
मक्का	1400-1550	1400-1500	1300-1400	1290-1350	1250-1350	1250-1350
जौ	1350-1450	1350-1400	1350-1400	1300-1350	1300-1400	1300-1350
बाजरा	1325-1400	1350-1450	1200-1350	1200-1300	1200-1350	1250-1350
ज्वार	1700-1900	1850-2100	1900-2100	1600-1700	1650-1850	1650-1850
गुड़ रसकट	3000-3400	3400-3500	3200-3500	3000-3400	3300-3500	3200-3500
गेहूँ चापड़	1300-1500	1350-1450	1300-1450	1450-1550	1300-1450	1300-1450
राइस ब्रान (डी.ओ.आर.बी)	850-900	900-950	825-900	900-1000	950-1000	850-950
मूंगफली खल	1900-2100	2000-2300	1900-2100	2000-2150	2000-2150	2000-2150
सरसों खल	1550-1700	1550-1650	1500-1600	1550-1800	1550-1650	1550-1650
बिनोला खल	1800-2200	1800-2000	1400-1750	1950-2300	1750-2000	1450-1850
तिल खल	2650-2750	2500-2800	2300-2500	2600-2700	2500-2750	2300-2350
ब्रांडेड पशु आहार	1500-1900	1500-1900	1500-1900	1600-1900	1600-1900	1600-1900
मोठ चूरी	1450-1600	1400-1500	1300-1450	1425-1525	1400-1525	1300-1450
मूंग चूरी	1700-1800	1650-1750	1450-1700	1650-1750	1650-1700	1450-1650
उड़द चूरी	1350-1400	1400-1450	1250-1450	1300-1425	1300-1400	1250-1400
चना चूरी	1900-2000	1850-2000	1750-1850	1950-2000	1850-2000	1750-1950
ग्वार कोरमा	2100-2350	2300-2500	2450-2500	2150-2350	2350-2550	2500-2600

अक्टूबर, नवम्बर व दिसम्बर माह के लिए सामयिक कृषि क्रियाएं

प्रदेश की सर्द कालीन चारा फसलें मुख्यतः सिंचाई आधारित होती हैं। इन चारा फसलों में जई, रिजका, बरसीम तथा जौ का प्रमुख स्थान है। रबी चारा फसलों की बुवाई का उत्तम समय अक्टूबर से मध्य नवम्बर तक रहता है। किसान भाई चारा फसलों का अच्छा उत्पादन लेने के लिए उन्नत किस्म के बीजों का प्रयोग, समय पर बुवाई तथा समय पर सिंचाई करें। कृषि की नवीनतम तकनीकों जैसे बीजोपचार, कतार में बुवाई, उर्वरकों की उचित मात्रा का प्रयोग तथा जैविक पौध संरक्षण उपाय अवश्य करें। इस समय खरीफ फसलों की कटाई इस प्रकार करें ताकि वर्षा के पानी की संरक्षित नमी पर खेती की तैयारी हो सके।

जई

यह रबी मौसम की प्रमुख चारा फसल है, जिसकी जल मांग अपेक्षाकृत कम होने के कारण, पानी की कमी वाले स्थानों, हल्की अम्लीय या लवणीय भूमि (पी.एच. 8.5) में भी उगाई जा सकती है।



उन्नत किस्में:— केन्ट, ओ.एस-6, ओ.एस-7, यू.पी.ओ.-94, ओ.एल.-125 आदि उन्नत किस्में जई की खेती के लिए उपयुक्त हैं।

खेत की तैयारी:— उपजाऊ व उचित जल निकास वाली दोमट से चिकनी भूमि जई के लिये सर्वोत्तम रहती है। एक बार मिट्टी पलटने वाले हल से गहरी जुताई करने के बाद 4 जुताई हैरो, कल्टीवेटर या देशी हल से करें।

बीज की मात्रा एवं बुवाई:— बुवाई के लिये मध्य अक्टूबर से मध्य नवम्बर का समय सबसे उपयुक्त है। इसका बीज 100-120 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर बुवाई के लिए काम में ले। जई के बीजों को ट्राइकोडर्मा कल्चर से 5 ग्राम प्रति किलों के हिसाब से उपचारित कर बुवाई करें। इस उपाय से फसल को जड़ गलन से बचाया जा सकता है। कतार से कतार की दूरी 20-25 से.मी. तथा गहराई 5-7 से.मी. रखते हुए पोरा या सीड ड्रिल से बुवाई करें।

खाद एवं उर्वरक:— हरे चारे की फसल के लिए 15-20 टन सड़ी हुई गोबर की खाद प्रति हैक्टेयर की दर से बुवाई से एक माह पूर्व भूमि में मिला दें। इसकी अधिक पैदावार के लिए 80 किलो नत्रजन तथा 40 किलो फास्फोरस की मात्रा प्रति हैक्टेयर खेत में डालें। फास्फोरस की पूरी एवं नत्रजन की आधी मात्रा बुवाई के पूर्व दें। शेष नत्रजन की आधी मात्रा को दो बराबर भागों में बांटकर बुवाई के 30-35 दिन बाद एवं प्रथम कटाई के उपरांत सिंचाई के साथ दें। फूटान एवं फूल आने की अवस्था पर थायोयूरिया 500 पी पी एम (5 ग्राम को 10 लीटर पानी में) का घोल बनाकर छिड़काव करने पर पैदावार में बढ़ोतरी होती है।

सिंचाई:— जई की फसल में 4-5 सिंचाईयों की आवश्यकता होती है। पहली सिंचाई बुवाई के लगभग एक माह के बाद व अन्य सिंचाई 20-25 दिन के अंतराल पर करें।

कटाई:— प्रथम कटाई फूल आना शुरू होते ही 55 दिन बाद तथा दूसरी कटाई बाली आने की अवस्था पर करें।

रिजका (लूसन)

रिजका एक फलीदार चारे वाली बहुवर्षीय फसल है, जो दिसम्बर से जुलाई तक हरा चारा देती है। इसको चारा फसलों की रानी कहा जाता है, क्योंकि ग्रीष्मकाल में भी यह हरे चारे की पूर्ति करती है। इस फसल को बरसीम की अपेक्षा कम सिंचाई की आवश्यकता होती है। यह हरे चारे के उत्पादन के साथ-साथ भूमि की उर्वरक क्षमता को बढ़ाती है।



उन्नत किस्में:— टी-9, आर.एल.-88, आनंद-2 (एकवर्षीय), सिरसा-8, सिरसा-9, कम्पोजिट-5 (बहुवर्षीय), एल.एल.सी.-3, एल.एल.सी.-5, एन.डी.आर.आई.सलेक्शन-1, आनन्द-2, एवं कृष्णा आदि उन्नत किस्में हैं।

खेत की तैयारी:— रिजका की बुवाई के लिये दोमट मिट्टी सर्वोत्तम है। भूमि की एक जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से तथा दो से तीन जुताई देशी हल से कर पाटा लगावें।

बीज की मात्रा एवं बुवाई:— बुवाई हेतु मध्य अक्टूबर से नवम्बर अंत तक का समय उपयुक्त है। इसका 25 से 30 किलो प्रमाणित बीज प्रति हैक्टेयर की दर से बुवाई के काम में लें। सूखी क्यारियों में बुवाई के लिये बीज छिड़कने के बाद रेक चलाकर अच्छी तरह मिट्टी में मिला कर सिंचाई करें। रिजके की बुवाई 20 से 25 सेमी की दूरी पर लाइनों में 2 से 3 सेमी की गहराई पर सीड ड्रिल की सहायता से की जा सकती है। इस विधि से लगभग 15 किलो बीज की प्रति हैक्टेयर आवश्यकता होती है।

खाद एवं उर्वरक:— 15 से 20 टन सड़ी हुई गोबर की खाद, 20 किलो नत्रजन तथा 32 किलो फास्फोरस प्रति हैक्टेयर खेत में डालें। गोबर की खाद बुवाई के एक माह पूर्व तथा नत्रजन एवं फास्फोरस की पूरी मात्रा बुवाई के पहले खेत में उर कर दें। प्रत्येक कटाई के बाद 16 किलो नत्रजन प्रति हैक्टेयर देने से हरे चारे की अधिक पैदावार प्राप्त कर सकते हैं।

सिंचाई:— बुवाई के बाद अगली दो सिंचाईयां 5 से 7 दिन के अन्तर पर करें जिससे सभी बीज उग सकें। हल्की मिट्टियों में 10 से 12 दिन के अंतराल पर तथा भारी मिट्टी वाले क्षेत्रों में रिजके की फसल में 20 से 25 दिन के अंतराल पर आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।

पौध संरक्षण:— रिजके की फसल से बीज उत्पादन करना हो तो इसमें पायी जाने वाली रोमिल फफूंद की रोकथाम के लिए डाइथेन एम. 45 का 0.2 प्रतिशत घोल 500 लीटर प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें तथा छिड़काव के बाद 10 से 15 दिन तक चारे की कटाई ना करें। रिजके में मृदु रोमिल आसिता रोग का प्रकोप शरद ऋतु में अधिक नमी की अवस्था में होता है।

कटाई:— इस फसल से हरा चारा दिसम्बर से जुलाई माह तक मिलता है, अतः पहली कटाई बुवाई के 55 से 60 दिन बाद तथा अगली कटाईयां 30 से 35 दिन के अंतराल पर करें।

बरसीम

यह रबी के मौसम में उगाई जाने वाली प्रमुख फलीदार चारे की फसल है। इसकी उपज रिजके की अपेक्षा अधिक होती है तथा चारा अत्यन्त मुलायम, स्वादिष्ट एवं प्रोटीन व खनिज तत्वों से भरपूर होता है। इसको चारे वाली फसलों का सम्राट कहा जाता है। बरसीम चारा प्रदान करने के अतिरिक्त भूमि की उर्वरा शक्ति भी बढ़ाती है। यह क्षारीय एवं लवणीय भूमि को भी सुधारती है।



उन्नत किस्में:— मसकावी, वरदान, बी.एल.-10, बी.एल.-22, जे. वी.-1, खदरावी, पूसा जाइन्ट, टी-780, टी-678, टी-724 आदि उन्नत किस्में बरसीम की खेती के लिए उपयुक्त हैं।

खेत की तैयारी:— इसके लिए मटियार दोमट भूमि सर्वोत्तम रहती है। अच्छे जल धारण क्षमता युक्त, जल निकास एवं वायु संचार वाली भूमि में इसकी बढ़वार अच्छी होती है। इसकी बुवाई के लिये एक जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से तथा दो जुताई देशी हल से करें। इसके बाद खेत को पाटा लगाकर समतल बनायें एवं उचित आकार की क्यारियाँ बनायें।

बीज की मात्रा एवं बुवाई:— बुवाई हेतु अक्टूबर माह उपयुक्त है। इसका 25 से 30 किलो उन्नत बीज प्रति हैक्टेयर की दर से बुवाई के काम में लें। कासनी के बीजों को अलग करने के लिये बरसीम के बीजों को 5 प्रतिशत नमक के घोल में डुबोएं, ऊपर तैरते हुए कासनी एवं बरसीम के हल्के बीजों को बरसीम के नीचे बैठे स्वस्थ बीजों से अलग कर दें। नीचे बैठे स्वस्थ बीजों को सादा पानी से दो से तीन बार धोकर छाया में सुखाले। बीजों को राइजोबियम ट्राइफोलियम नामक जीवाणु कल्चर से उपचारित कर बुवाई करें। उपचारित बीज को छाया में सुखाकर बुवाई करें। जल्दी व पर्याप्त मात्रा में हरा चारा प्राप्त करने के लिए सरसों या चाइनीज कैबेज का बीज 2 किलो प्रति हैक्टेयर की दर से बरसीम के साथ मिलाकर बुवाई करें। बुवाई हेतु खेत की समतल क्यारियों में पानी भर कर गंदला कर लें तथा जब 1-1.5 सेमी. पानी रह जायें तब बीज छिड़क दें। सूखी क्यारियों में बुवाई के लिये बीज छिड़कने के बाद रेक चलाकर अच्छी तरह मिट्टी में मिला कर सिंचाई करें।

खाद एवं उर्वरक:— 15 से 20 टन गोबर की खाद बुवाई के एक माह पहले खेत में मिलावें एवं 20 से 30 किलो नत्रजन एवं 32 किलो फॉस्फोरस प्रति हैक्टेयर बुवाई से पहले खेत में डालें।

सिंचाई:— अच्छे अंकुरण व बढ़ोतरी के लिये बरसीम की बुवाई के बाद 4 से 5 दिन के अंतराल पर 2 से 3 हल्की सिंचाई करें। अक्टूबर माह में बोई गई बरसीम में 15 से 20 दिनों के अंतराल पर आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहें।

कटाई:— बरसीम से नवम्बर के अंत से अप्रैल तक चारा मिलता है। इसकी 5 कटाई की जा सकती है। अतः पहली कटाई बुवाई से 50 से 55 दिन बाद तथा अगली कटाईयां 30 से 35 दिन के अन्तराल पर करें।

जौ

यह रबी की मुख्य चारा व अनाज फसल है जो लवण सहनशील व कम पानी में उगायी जा सकती है।

उन्नत किस्में:— आर.डी.-2552, आर.डी.-2035 तथा आर.डी.-2715 आदि उन्नत किस्में जौ की खेती के लिए उपयुक्त हैं।

खेत की तैयारी:— इसकी खेती सभी प्रकार की भूमि में की जा सकती है। किन्तु अच्छी पैदावार के लिए दोमट मिट्टी उपयुक्त है। जहां पर कठोर व खारी भूमि है वहां पर भी इसकी खेती आसानी से की जा सकती है। खेत में एक-दो आडी-तिरछी जुताई कर पलेवा करने के बाद फसल की बुवाई करें।



बीज की मात्रा एवं बुवाई:— बुवाई का उपयुक्त समय 1 नवम्बर से 20 दिसम्बर का है। इसका बीज 100 क्रि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर बुवाई के लिए काम में ले तथा कतार से कतार की दूरी 20-25 से.मी. रखें।

खाद एवं उर्वरक:— हरे चारे की फसल के लिए 15-20 टन सड़ी हुई गोबर की खाद प्रति हैक्टेयर की दर से बुवाई से 4-5 सप्ताह पूर्व भूमि में मिला दें। अधिक पैदावार के लिए 80 किलो नत्रजन, 40 किलो फॉस्फोरस तथा 40 किलोग्राम पोटाश प्रति हैक्टेयर खेत में डालें। फास्फोरस व पोटाश की पूरी एवं नत्रजन की आधी मात्रा बुवाई के पूर्व दें। शेष नत्रजन की आधी मात्रा को दो बराबर भागों में बांटकर पहली सिंचाई एवं प्रथम कटाई के उपरांत सिंचाई के साथ दें।

सिंचाई:— जो कि चारा फसल के लिए 4-5 सिंचाईयों की आवश्यकता होती है। पहली सिंचाई बुवाई के लगभग एक माह के बाद व अन्य सिंचाई आवश्यकतानुसार करते रहना चाहिए।

कटाई:— जौ की दो कटाई लेते हैं। प्रथम कटाई बुवाई के 55 दिन बाद करें तथा दूसरी कटाई बाली आने की अवस्था पर की जाती है।

घासों, झाड़ियाँ एवं वृक्ष

वर्षा ऋतु में खेतों में मेड़ों पर उगी हुई घासों को काटकर छायादार स्थान पर सुखा लें। घास को तेज धूप में नहीं सुखाना चाहिए, क्योंकि तेज धूप से घास पीली पड़ जायेगी तथा पोषक तत्व भी नष्ट हो जायेंगे। बहुवर्षीय घास वाली फसलें जैसे सेवण, धामण



व अंजन घास की प्रथम कटाई पुष्प आने की अवस्था पर करें तथा इसके उपरान्त 40 से 45 दिन बाद पुनः कटाई करें। कटाई जमीन से 10 से 15 सेमी. ऊँचाई से करें ताकि उसकी पुनः बढ़वार जल्दी हो सके। अगर हरे चारे की पैदावार अधिक हो तो इसका कुछ हिस्सा सुखा लेना चाहिए जो चारे की कमी के समय पशुओं को खिलाया जा सकता है। नवम्बर माह में किसान भाईयों को चाहिए कि इस माह में मानसून के समय बोई गई बहुवर्षीय घासों की कटाई कर लें क्योंकि बाद में अधिक सर्दी में घास सूख जाती है तथा सुषुप्त अवस्था में चली जाती है। जिससे अगली कटाई तापमान बढ़ने पर फरवरी-मार्च में ही प्राप्त होती है। सूखी घास को बांधकर बंडल बनाकर रखें। बहुवर्षीय घासों की कटाई के पश्चात फसलों में सिंचाई कर 30 से 40 किलो नत्रजन प्रति हैक्टेयर का छिड़काव करें। अक्टूबर माह में पशुपालक अपने पशुओं के लिए हरा चारा वृक्षों से भी प्राप्त कर सकते हैं। छायादार वृक्षों में बबूल, सुबबूल, झरबेरी, अरडू, सरस, खेजड़ी आदि वृक्षों से हरा चारा प्राप्त किया जा सकता है।

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना को अपनाएं

प्रो. आर.के. धूड़िया, दिनेश आचार्य एवं महेन्द्र सिंह मनोहर

पशुधन चारा संसाधन प्रबन्धन एवं तकनीक केन्द्र, राजुवास, बीकानेर

भारतीय कृषि मानसून आधारित है। कृषि में प्राकृतिक आपदा जैसे सूखा, अतिवृष्टि, बाढ़, ओला, तूफान, कीट व रोगों के कारण जोखिम बना रहता है। इस जोखिम को कम करने के लिए भारत सरकार ने समय-समय पर फसल बीमा के कई प्रारूपों को क्रियान्वित किया है। जिनमें से व्यापक फसल बीमा योजना, राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना, वर्षा बीमा, मौसम आधारित फसल बीमा योजना तथा संशोधित राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना मुख्य है। इन बीमा योजनाओं से प्राप्त अनुभवों के आधार पर, इनके लाभकारी पहलुओं को सम्मिलित करते हुवे, भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 13 जनवरी 2016 को प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना शुरू की गयी। इस बीमा योजना में प्रीमियम (बीमा किस्त) दरों को किसानों की सुविधा के लिये बहुत कम रखा गया है, ताकि सभी स्तर के किसान आसानी से फसल बीमा का लाभ ले सकें, इसके लिये खरीफ फसलों का प्रीमियम 2 प्रतिशत, रबी फसलों का 1.5 प्रतिशत तथा वाणिज्यिक और बागवानी फसलों का 5 प्रतिशत रखा गया है। इस योजना के क्रियान्वयन से भविष्य में सकल घरेलू उत्पादन बढ़ेगा, किसानों में सकारात्मक ऊर्जा का विकास होगा, जिससे किसानों की कार्यक्षमता में सुधार होगा तथा सूखे और बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाओं से फसल नष्ट होने तथा कर्ज न चुकाने के कारण आत्महत्या जैसे कदम उठाने की प्रवृत्ति पर अकुंश लगेगा।

योजना के उद्देश्य :-

- प्राकृतिक आपदाओं, कीट और रोगों के परिणामस्वरूप अधिसूचित फसलों में विफलता की स्थिति में किसानों को बीमा कवरेज और वित्तीय सहायता प्रदान करना।
- कृषि में किसानों की सतत् प्रक्रिया सुनिश्चित करने के लिए उनकी आय को स्थायित्व देना।
- किसानों को कृषि में नवाचार एवं आधुनिक पद्धतियों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना।
- कृषि क्षेत्र में ऋण के प्रवाह को सुनिश्चित करना।

योजना की प्रमुख विशेषताएँ :-

बीमित फसलें :-सरकार द्वारा जारी की गई अधिसूचना में प्रत्येक मौसम में क्षेत्रवार अधिसूचित फसलों को ही बीमा योग्य माना जाता है।

बीमा इकाई :-राज्य सरकार द्वारा जारी की गई अधिसूचना के अनुसार बीमा इकाई क्षेत्र-तहसील/पटवार मण्डल स्तर होगा।

कवर किये जाने वाले किसान :-

अनिवार्य आधार पर :-वे सभी किसान जो वित्तीय संस्थानों से अधिसूचित फसल के लिए मौसमी कृषि प्रचालन ऋण ले रहे हैं, अर्थात् ऋणी किसान।

स्वैच्छिक आधार पर :-वे सभी किसान जो संसूचित फसल उगा रहे हैं या उगाना चाहते हैं अर्थात् अऋणी किसान।

जोखिम की कवरेज :-फसल के निम्नलिखित चरण और फसल नुकसान के लिए जिम्मेदार जोखिम योजना के अन्तर्गत कवर किये जाते हैं-

(1) बुवाई अथवा रोपण में रोक/विफलता संबंधित जोखिम :- बीमित क्षेत्र में कम बारिश या प्रतिकूल मौसमी परिस्थितियों के कारण बुवाई अथवा रोपण नहीं होने पर बीमा लाभ मिलेगा।

(2) खड़ी फसल (बुवाई से कटाई तक के लिये) :- किसानों द्वारा रोके नहीं जा सकने वाले जोखिमों जैसे सूखा, अकाल, बाढ़, सैलाब, कीट एवं रोग, भूस्खलन, प्राकृतिक आग और बिजली, तूफान, ओले, चक्रवात, आंधी और बवंडर आदि के कारण उपज के नुकसान को कवर करने के लिए व्यापक जोखिम बीमा प्रदान की जाती है।

(3) कटाई के उपरान्त नुकसान :- फसल कटाई के बाद चक्रवात और चक्रवाती बारिश और बेमौसम बारिश के विशिष्ट खतरों से उत्पन्न हालत के लिए कटाई से अधिकतम दो सप्ताह की अवधि के लिए भी जोखिम कवरेज उपलब्ध है।

(4) स्थानीयकृत आपदायें :- अधिसूचित क्षेत्र में मूसलाधार बारिश, भूस्खलन और बाढ़ जैसे स्थानीय जोखिम की घटना से प्रभावित खेतों में होने वाले नुकसान की क्षतिपूर्ति की जायेगी। युद्ध एवं आणविक खतरों, शरारतपूर्ण क्षति एवं अन्य रोके जा सकने वाले जोखिम से होने वाली क्षति को योजना के तहत बीमा कवर से बाहर माना जायेगा।

फसल बीमा कैसे कराएं?

ऋणी कृषक:- अधिसूचित इकाई क्षेत्र एवं अधिसूचित फसल के लिए जिन कृषकों को किसी वित्तीय संस्थान (सहकारी बैंक एवं सहकारी समिति, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, व्यवसायिक बैंक एवं भूमि विकास बैंक आदि) द्वारा फसल ऋण की सीमा अनुमोदित (स्वीकृत) की गई हो तथा बीमा प्रावधान में निर्धारित तिथि (सामान्यतः खरीफ मौसम में 31 जुलाई तथा रबी मौसम में 31 दिसम्बर) तक ऋण वितरित किया गया हो। इन अन्तिम तिथियों तक ऋण लेने वाले सभी कृषकों का अनिवार्य आधार पर बैंकों द्वारा स्वतः ही बीमा कर दिया जाता है।

गैर ऋणी एवं बटाईदार कृषक :- गैर ऋणी कृषक अपनी फसलों का बीमा राज्य सरकार द्वारा निर्धारित अन्तिम तिथि (सामान्यतः खरीफ मौसम में 31 जुलाई तथा रबी मौसम में 31 दिसम्बर) तक निकट के केन्द्रीय सहकारी बैंक/क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक/वाणिज्यिक बैंक की शाखाओं एवं सी.एस.सी. (कॉमन सर्विस सेन्टर) के माध्यम से करा सकेंगे। इसके अतिरिक्त बीमा कम्पनी के अधिकृत बीमा एजेन्ट अथवा प्राधिकृत प्रतिनिधि द्वारा भी गैर ऋणी कृषकों का बीमा किया जाता है। इसके लिये गैर ऋणी कृषकों द्वारा घोषणा पत्र देना अनिवार्य होता है। इस घोषणा-पत्र में प्रत्येक खसरा संख्या का कुल क्षेत्र, प्रस्तावित फसल का बुवाई क्षेत्र, मालिक का नाम एवं बीमा हित का प्रकार (स्वयं, परिवार या बटाई) को अंकित करना होगा। इस घोषणा पत्र के साथ निम्न दस्तावेजों को भी संलग्न करना आवश्यक होगा-

- ❖ आधार कार्ड की प्रति।
- ❖ जमीन बटाई का शपथ पत्र (बंटाईदार होने पर)
- ❖ नवीनतम गिरदावरी की नकल
- ❖ बैंक खाते के पास-बुक की प्रति या खाते का रद्द चैक।
- ❖ बुवाई प्रमाण-पत्र जो कि कृषि या राजस्व विभाग के कार्मिकों द्वारा जारी होना चाहिए।

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के प्रावधानों के अनुसार फसल में किसी भी प्रकार के जोखिम से हानि होने पर उसकी क्षतिपूर्ति का भुगतान सीधे कृषक के खाते में कर दिया जाता है।

दूधारू पशुओं के लिए जरूरी है सूक्ष्म खनिज तत्व

डॉ. दीपिका धूड़िया

सहायक प्राध्यापक, पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर

दूधारू पशुओं के प्रजनन और दूध उत्पादन के लिए खनिज तत्व पशुओं के आहार में उतने ही जरूरी है जितना कि पशुओं की खुराक में हरा चारा और दाना। कुछ सीमा तक खनिज तत्व चारे और दाने से पशुओं को मिल जाते हैं, पर इसकी मात्रा उनके दूध देने वाली शक्ति और शारीरिक जरूरतों से कहीं कम होती है। कृषि की आधुनिक विधियों तथा रसायनिक खादों के प्रयोग से खाद्यान्नों का उत्पादन बढ़ने के कारण भूमि में कुछ खनिज तत्व जैसे फास्फोरस, कोबाल्ट, मैग्नीशियम, कॉपर, जिंक, आयोडीन व सल्फर आदि की कमी या अभाव सा हो गया है। इसके कारण पशु चारे में इनकी मात्रा काफी कम है। खाद्य में उपस्थित इन खनिजों का शरीर में अवशोषण काफी कम होता है। इसलिए पशुओं को स्वस्थ रखने, विभिन्न रोगों से बचाने एवं उनकी उत्पादन क्षमता बनाए रखने के लिए चारे पर निर्भर न होकर अतिरिक्त खनिज तत्व मिश्रण दिया जाना आवश्यक है। खनिज तत्वों को शरीर की आवश्यकता के अनुसार मुख्यतः दो भागों में बांटा गया है। कैल्शियम, फॉस्फोरस, सोडियम, पोटेशियम, मैग्नीशियम, सल्फर एवं क्लोरिन आदि मुख्य खनिज तत्व हैं। आयरन, जिंक, ताँबा, आयोडीन, मैग्नीज, कोबाल्ट, सेलेनियम, मोलिबडैनिम, आदि सूक्ष्म खनिज तत्व हैं। इनकी शरीर में आवश्यकता काफी कम होती है लेकिन पशुओं के प्रजनन एवं उत्पादन में इनकी अहम भूमिका है।

आयरन :- आयरन पशुओं में खून बनाने के लिए अति आवश्यक है। इसकी कमी से खून में हीमोग्लोबिन की मात्रा कम हो जाती है तथा एनीमिया रोग हो जाता है, पशु कमजोर हो जाता है, पीला पड़ जाता है जिसका प्रतिकूल असर उसके स्वास्थ्य व दूध उत्पादन पर पड़ता है।

ताँबा:- ताँबा पशुओं में सामान्य उत्पादन और प्रजनन के लिए आवश्यक है। खून में हिमोग्लोबिन बनाने के लिए लोहे के साथ-साथ इस तत्व का होना भी आवश्यक है। शरीर में तैयार होने वाले ऑक्सीकारक तत्वों, जो शरीर की कोशिकाओं के लिए हानिकारक होते हैं और इनको नष्ट करने के लिए ताँबे की आवश्यकता होती है। ताँबे की कमी से पशु का विकास धीमी गति से होता है। हड्डियाँ कमजोर होना, प्रजनन क्षमता कम होना, रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होना, यौवनारम्भ देर से होना, बार-बार गर्भधारण न करना, भ्रूण मर जाना, जेर अटकना आदि समस्याएं आ सकती हैं।

कोबाल्ट:- जुगाली करने वाले पशुओं के लिए यह एक अति आवश्यक विटामिन बी-12 के बनने के लिए सहायक होता है। यह विटामिन पशुओं के पेट में पाये जाने वाले जीवाणुओं के लिए आवश्यक है जो भोजन के पाचन में सहायक होते हैं। कोबाल्ट की कमी से पशु में कमजोरी आना, पशु का विकास धीमी गति से होना, एनीमिया, प्रसूति के बाद गर्भाशय पूर्वावस्था में देर से आना, जिससे अगला बच्चा देर से होना, अनियमित मद्चक्र, बार-बार कृत्रिम गर्भाधान करना, दुग्ध उत्पादन में कमी आना आदि समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं।

आयोडीन:- दुग्ध उत्पादन के उद्देश्य से थायरोक्सिन हार्मोन बहुत ज्यादा महत्वपूर्ण है। थायरोक्सिन हार्मोन बनाने के लिए आयोडीन आवश्यक है। पशुओं में आयोडीन की कमी से गलगंड नामक रोग होता

है जिसमें थाइरोइड ग्रन्थि का आकार बढ़ जाता है व थायरोक्सीन हार्मोन बनना कम अथवा रुक जाता है। गर्भवती पशुओं में आयोडीन की अत्यधिक कमी से गर्भपात हो जाता है या मरे हुए, कमजोर, चलने में असमर्थ बच्चे पैदा होते हैं। त्वचा कठोर व खुरदरी हो जाती है।

जिंक:- पशु शरीर में कोशिकाओं की वृद्धि, हार्मोन के निर्माण, उपापचय, भूख नियंत्रण रोग-प्रतिरोध क्षमता नियंत्रित करने वाले एंजाइम के लिए जिंक की आवश्यकता होती है। जिंक का अधिकांश भाग हड्डियों, बाह्य उत्तकों व रक्त में पाया जाता है। इस तत्व की अधिक मात्रा चमड़ी, बाल और ऊन में पायी जाती है। जिंक की कमी से बाल गिरने लगते हैं तथा बालों की वृद्धि कम हो जाती है। त्वचा के अनेकों रोग उत्पन्न हो जाते हैं। चारा पचाने की क्षमता में कमी आ जाती है व पशु चारा खाना छोड़ देता है।

मैग्नीज:- मैग्नीज तत्व विभिन्न एन्जाइमों के उत्प्रेरण में सहायता करता है जो कि मुख्य रूप से शरीर में ऊर्जा उत्पादन से सम्बन्धित है। मैग्नीज की कमी से पशु का ढांचा विकसित न होना, पशु का विकास धीमी गति से होना पैरों में कमजोरी आना, संधि (ज्वाइंट) बड़े होना, हड्डियों की ताकत कम होना, पशु कमजोर होना, पैर गुथना आदि समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। इस तत्व का प्रजनन क्रिया में भी विशेष महत्व है। जिन पशुओं के आहार में इस तत्व की कमी होती है उनमें यौन परिपक्वता देरी से आती है, गाय, भैंस गर्भधारण देरी से करते हैं। ग्याभिन पशुओं में नवजात या तो कमजोर पैदा होता है या फिर मृत उत्पन्न होता है।

सैलेनियम:- पशु प्रजनन प्रक्रिया के दौरान और प्रजनन के बाद होने वाले विकारों को रोकने में सैलेनियम का काफी महत्व है। सैलेनियम की कमी से बछड़ों व मेमनों में सफेद पेशी बीमारी एवं मस्तिष्क मृदुता नामक रोग हो जाता है जिसमें पशु की बढ़वार रुक जाती है व प्रजनन क्षमता भी कम हो जाती है। इस तत्व को अधिक मात्रा में लेने पर अन्धापन, लड़खड़ाना और डेगनाला नामक रोग हो जाता है जिसमें पशु को कम दिखाई देना, सांस लेने में तकलीफ होना, पेट में दर्द होना आदि लक्षण देखने को मिलते हैं, अन्त में पशु की मृत्यु भी हो जाती है।

मोलिब्डेनम:- मोलिब्डेनम नामक तत्व एन्जाइमों के घटक के रूप में कार्य करते हैं इन तत्वों की कमी से उतनी भयानक बीमारियाँ नहीं होती हैं जितनी की इसकी थोड़ी से अधिक मात्रा ग्रहण करने से होती है। इसकी अधिकता से पशुओं में पीट-स्लार नामक रोग हो जाता है। पशु को दस्त लग जाते हैं, वजन कम हो जाता है। साथ ही यह तत्व फॉस्फोरस के उपापचयन पर भी बुरा प्रभाव डालता है। नर पशुओं में इस तत्व की अधिकता से शुक्राणु बनना कम अथवा बिल्कुल बन्द हो जाता है।

पशुओं को उत्पादक बनाये रखने के लिए ऐसा पशु आहार दिया जाना चाहिये जिसमें 2 प्रतिशत की दर से खनिज तत्व व 1 प्रतिशत की दर से साधारण नमक मिला हुआ हो या प्रति पशु प्रतिदिन 30-50 ग्राम खनिज तत्व व 20-30 ग्राम नमक अवश्य देते रहना चाहिये। इस प्रकार पशुओं को खनिज तत्वों की कमी से उत्पन्न होने वाली बीमारियों से बचाया जा सकता है, साथ ही साथ उनका दूध उत्पादन भी बढ़ाया जा सकता है।

पशु की विभिन्न अवस्थाएं और आहार की आवश्यकता

डॉ. राजेश नेहरा एवं डॉ. शब्द प्रकाश

पशुपोषण विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

पशु को आहार खिलाते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि वह आहार किस उद्देश्य के लिए दिया जा रहा है तथा पशु के शरीर में वह आहार और कैसे उपयोग में आता है। इस आधार पर आहार/राशन को हम निम्नलिखित भागों में बाँट सकते हैं—

जीवन निर्वाह आहार : चारे तथा दाने की वह कम से कम मात्रा जो पशु की आवश्यक जीवन क्रियाओं के लिए जरूरी होता है, जिसमें पशु विशेष के वजन में न तो कमी आये न ही वृद्धि हो, जीवन निर्वाह आहार कहलाता है। जीवन निर्वाह आहार की मात्रा पशु के वजन पर निर्भर करती है। दूसरे शब्दों में अधिक वजन वाले पशु को जीवन निर्वाह के लिए अधिक आहार की आवश्यकता पड़ती है। एक वयस्क पशु को चारे के अतिरिक्त लगभग एक से दो किलोग्राम दाना मिश्रण जीवन निर्वाह आहार के रूप में दिया जाता है।

बढ़वार आहार : चारे व दाने की वह मात्रा जो छोटे बच्चों की शारीरिक वृद्धि कर उनका वजन बढ़ाने में खर्च होती है, बढ़वार राशन कहलाती है। इसे जीवन निर्वाह आहार के अतिरिक्त दिया जाता है। बढ़ते हुए कटडे/कटडियों को उम्र के अनुसार आधा किलो से दो किलो तक दाना मिश्रण चारे के अतिरिक्त खिलाया जाता है।

गर्भावस्था आहार : पशु के सात महीने से अधिक की ग्याभिन होने पर उसे जीवन निर्वाह के अतिरिक्त गर्भावस्था में बच्चे के विकास तथा स्वयं को प्रसूति काल और उसके बाद स्वस्थ रखने के लिए जिस अतिरिक्त राशन की आवश्यकता होती है उसे गर्भावस्था आहार कहते हैं। इसके लिए पशु को आठवें महीने से 1 से 2 किलोग्राम दें।

उत्पादकता आहार : जीवन निर्वाह आहार के अतिरिक्त जो राशन दूध उत्पादन के लिए दिया जाता है, वह उत्पादकता आहार कहलाता

है। उत्पादकता आहार की मात्रा पशु द्वारा दिये जाने वाले दूध पर निर्भर करती है। दूसरे शब्दों में अधिक दूध देने वाले पशु को अधिक उत्पादकता आहार दिया जाता है। पशु को प्रत्येक 2 किलोग्राम दूध पर (6 से 7 किलोग्राम प्रतिदिन दूध होने पर) 1 किलोग्राम दाना मिश्रण की आवश्यकता पड़ती है।

➤ वे गाय-भैंसे जो दूध नहीं देती, ग्याभिन नहीं है और बूढ़ी हो चली है, उन्हें केवल जीवन निर्वाह के लिए ही आवश्यकता होती है। इसके विपरीत जिस बछड़ी/कटडी ने पहली बार बच्चा दिया है तथा फिर ग्याभिन भी हो गई, उसे सबसे अधिक आहार की जरूरत पड़ती है। प्रजनन की सबसे अधिक समस्यायें इन्हीं पशुओं में देखने को मिलती हैं क्योंकि इन्हें जीवन निर्वाह व उत्पादकता आहार के अतिरिक्त शरीर की बढ़वार के लिए भी पोषण की आवश्यकता होती है।

➤ यदि ब्याने के बाद पशु का वजन तेजी से घटता है तो यह इस बात का प्रतीक है कि उसे आवश्यकतानुसार आहार नहीं मिल पा रहा है। प्रारम्भ में पशु अपने अन्दर भण्डारित ऊर्जा स्रोत वसा को प्रयोग में लाता है। उसके समाप्त होने पर वह अपने अन्दर के प्रोटीन को प्रयोग में लाता है। तब भी आवश्यकतानुसार राशन नहीं मिलने पर उसका उत्पादन व बढ़वार दोनों बुरी तरह प्रभावित होते हैं।

यहाँ ध्यान रखने वाली बात यह है कि प्रजनन के लिए शरीर को ऊर्जा तभी मिलती है जब जीवन निर्वाह, बढ़वार और उत्पादन के लिए आवश्यक पोषण ठीक प्रकार से मिला हों। किसी एक प्रकार के आहार में भी कमी रहने पर सबसे पहले प्रजनन ही बाधित होता है। अतः यह कहा जा सकता है कि सन्तुलित आहार पशु के स्वास्थ्य, उत्पादन तथा प्रजनन क्षमता बनाये रखने के लिए आवश्यक है।

मुख्य समाचार

कृषक-पशुपालक वैज्ञानिक संवाद से अनुसंधान कार्यों की महती शुरुआत: कुलपति प्रो. छीपा

वेटरनरी विश्वविद्यालय में कृषक-पशुपालक वैज्ञानिक संवाद का दो दिवसीय कार्यक्रम 3-4 अगस्त को पशुधन चारा संसाधन प्रबन्धन एवं तकनीक केन्द्र में आयोजित किया गया। आत्मा परियोजना की केफेटेरिया गतिविधि बी-11 (ए) के तहत आयोजित इस संवाद में बीकानेर जिले के 25 कृषक-पशुपालकों और राजुवास के वैज्ञानिकों ने भाग लिया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. छीपा ने संवाद कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए कहा कि किसान और पशुपालकों की समस्याओं को चिन्हित कर उनके निराकरण के लिए अनुसंधान किया जाना महत्वपूर्ण है। कुलपति प्रो. छीपा ने कहा कि कृषक स्वयं कृषि वैज्ञानिक हैं अतः उनके लिए लेण्ड-टू-लैब जैसे कार्यक्रम अधिक सार्थक सिद्ध हुए हैं। उन्होंने वैज्ञानिकों का आह्वान किया कि वे खेती-बाड़ी और पशुपालन के वैज्ञानिक तौर तरीकों की जानकारी सहज और सरल भाषा में बताएं। आयोजन सचिव एवं केन्द्र के प्रमुख अन्वेषक प्रो. आर.के. धूड़िया ने बताया कि इस केन्द्र में कृषक-वैज्ञानिक संवाद का अनूठा कार्यक्रम पहली बार आयोजित किया जा रहा है जिससे अनुसंधान कार्यों को नए आयाम मिल सकेंगे। समारोह में उप निदेशक (कृषि) एवं पदेन परियोजना निदेशक 'आत्मा' श्री बी.आर. कड़वा, निदेशक क्लिनिकस प्रो. जे.एस. मेहता, पशु पोषण विभाग के प्रो. राधेश्याम आर्य, अनुसंधान सह निदेशक प्रो. ए.ए. गौरी तथा कुलपति के प्रशासनिक सचिव प्रो. बी.एन. श्रृंगी सहित अन्य राजुवास वैज्ञानिक उपस्थित थे। उद्घाटन सत्र में प्रगतिशील कृषक परमेश्वरलाल (श्रीडूंगरगढ़) और पशुपालक नवीन सिंह तंवर (बीकानेर) ने अपने विशिष्ट कार्यों और अनुभवों के बारे में जानकारी दी।



पशुपालकों ने सीखी हरा चारा प्रबंधन की तकनीकें

पशुधन चारा संसाधन प्रबंधन एवं तकनीक केन्द्र, राजुवास, बीकानेर और उपनिदेशक कृषि एवं पदेन परियोजना निदेशक "आत्मा" के संयुक्त तत्वाधान में 10-11 अगस्त को लूणकरणसर तहसील के 30 पशुपालकों का दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। राजुवास के वित्त नियंत्रक श्री अरविन्द बिश्नोई ने पशुपालकों को प्रशिक्षण प्रमाण पत्र वितरित करते हुए कहा कि इस प्रकार के वैज्ञानिक प्रशिक्षण में बताए गये उन्नत पशु पोषण के उपायों को लागू करके पशुधन से अधिक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। प्रशिक्षण समन्वयक एवं केन्द्र के प्रमुख अन्वेषक प्रो. आर.के. धूड़िया ने बताया कि प्रशिक्षण के अंत में पशुपालन प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम में विजेता रहे पशुपालक सुभाष बिश्नोई, कैलाश और हनुमान सिंह को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।



बीकानेर संभाग के गौशाला प्रबन्धकों- व्यवस्थापकों का प्रशिक्षण

राज्य के गोपालन विभाग के सौजन्य से पशुधन चारा संसाधन प्रबन्धन एवं तकनीक केन्द्र, बीकानेर द्वारा 16-18 अगस्त को बीकानेर संभाग के 39 गौशाला प्रबन्धकों का तीन दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया। अटल बिहारी वाजपेयी हिन्दी विश्वविद्यालय, भोपाल के पूर्व कुलपति प्रो. एम. एल. छीपा ने उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में सम्बोधित करते हुए कहा कि गौपालन हमारा पारम्परिक और उपयोगी व्यवसाय रहा है। गौशाला प्रबन्धकों को गोसेवा का पुनीत अवसर मिला है, जिसका उपयोग गो सेवा प्रचार के लिए भी किया जाना चाहिए। राजुवास के कुलपति प्रो. बी.आर. छीपा ने कहा कि बढ़ते शहरीकरण के कारण गोपालन की प्रवृत्ति में कमी हो रही है जबकि यह शुद्ध घी-दूध का प्रमुख स्रोत है। गौपालन रोजगार के रूप में एक उपयोगी व्यवसाय है अतः जागरूकता तथा वैज्ञानिक प्रशिक्षण से गोपालन को बढ़ावा मिलेगा। आयोजन सचिव एवं केन्द्र के प्रमुख अन्वेषक प्रो. आर.के. धूड़िया, अधिष्ठाता प्रो. त्रिभुवन शर्मा, अतिरिक्त निदेशक पशुपालन विभाग डॉ. रणजीत सिंह ने भी सम्भागियों को सम्बोधित किया। इस अवसर पर अतिथियों ने केन्द्र द्वारा तैयार प्रशिक्षण संदर्शिका का विमोचन किया। गोपालन विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ. जे.पी. अटल, उपनिदेशक पशुपालन विभाग डॉ. ओ.पी. किलानियां, डॉ. डी.एस. मीणा तथा कुलपति के प्रशासनिक सचिव प्रो. बी.एल. श्रृंगी भी मौजूद थे। समापन सत्र में पशुपालन विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ. अशोक कुमार विज ने प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए।



मार्गदर्शन : प्रो. बी. आर. छीपा, कुलपति

प्रधान संपादक

प्रो. राजेश कुमार धूड़िया
प्रमुख अन्वेषक

संकलन सहयोगी

दिनेश आचार्य

टीचिंग एसोसिएट

महेन्द्र सिंह मनोहर

टीचिंग एसोसिएट

दिनेश चन्द्र सक्सेना

संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क), से.नि.



भारत सरकार की सेवार्थ

बुक-पोस्ट

सेवा में

सम्पर्क सूत्र : प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, प्रमुख अन्वेषक, पशुधन चारा संसाधन प्रबन्धन एवं तकनीक केन्द्र, राजुवास, बीकानेर
फोन : 09414283388, email: lfrmtc.rajuvas@gmail.com; dhuriark12@gmail.com

पशुचिकित्सा व पशु विज्ञान की जानकारी प्राप्त करने
के लिए राजुवास के टोल फ्री नम्बर पर सम्पर्क करें।

➔ 1800 180 6224

स्वत्वाधिकार प्रमुख अन्वेषक, पशुधन चारा संसाधन प्रबन्धन एवं तकनीक केन्द्र, राजुवास, बीकानेर (राज.) के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर से मुद्रित एवं पशुधन चारा संसाधन प्रबन्धन एवं तकनीक केन्द्र, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. राजेश कुमार धूड़िया